मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

प्रो. मज़हर आसिफ़, कुलपति, जेएमआई ने औपनिवेशिक अतीत से दिमाग को आज़ाद करने में हिंदी और भारतीय भाषाओं की भूमिका पर ज़ोर दिया; जेएमआई- अंग्रेजी से हिंदी में 'सामाजिक विज्ञान की लर्नर्स ग्लोसरी' डेवलप करेगा

नई दिल्ली, 15 जनवरी, 2026

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग (CSTT) के तत्वावधान में और जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केंद्रीय विश्वविद्यालय) के राजनीति विज्ञान विभाग के सहयोग से अंग्रेजी से हिंदी में 'सामाजिक विज्ञान की लर्नर्स ग्लोसरी' विकसित करने पर आयोजित पाँच दिवसीय कार्यशाला 14 जनवरी, 2026 को विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के एम.एन. मीनाई सेमिनार कक्ष में एक समापन सत्र के साथ संपन्न हुई।

समापन भाषण जामिया मिल्लिया इस्लामिया के माननीय कुलपति, प्रो. मज़हर आसिफ़ ने दिया, जो भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग, दिल्ली मध्य-1 (कार्यालय) की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष भी हैं, और जेएमआई और CSTT के बीच सहयोग के मुख्य संरक्षक भी हैं। प्रो. आसिफ ने औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति पाने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए कहा, "आधुनिकता की झूठी भावना का लोगों के दिमाग पर ज़हरीला असर होता है। हमें भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को प्राथमिकता देकर इसे तुरंत ठीक करने की ज़रूरत है।" उन्होंने राजनीतिक शब्दावली के हिंदी और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में अनुवाद के काम की सराहना की और कार्यशाला में उपस्थित सभी लोगों को शुभकामनाएँ दीं।

सामाजिक विज्ञान की शब्दावली के अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के विषय पर आगे बोलते हुए, प्रो. आसिफ़ ने कहा, "केवल वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों का अनुवाद करना अनुवाद की भावना के साथ न्याय नहीं हो सकता है। शब्दावली का अनुवाद करते समय भूगोल, इतिहास और संस्कृति को संदर्भ में रखना होगा, चाहे वह आठवीं अनुसूची की भाषाएँ हों या कोई अन्य भाषा।"

एक पेशेवर अनुवादक और भारतीय और विदेशी भाषाओं के एक प्रमुख भाषा विशेषज्ञ के रूप में अपने व्यापक अनुभव के साथ, प्रो. आसिफ़ ने समिति के सदस्यों को सलाह दी कि वे प्रामाणिक अनुवाद की सीमाओं का ध्यान रखें, चाहे वह भारत में बोली और लिखी जाने वाली कोई भी भाषा हो। प्रोफेसर आसिफ़ ने तेरह विशेषज्ञ सदस्यों की टीम द्वारा किए गए काम की सराहना की, जिन्होंने सोशल साइंस में इस्तेमाल होने वाले तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों की शब्दावली को हिंदी में तैयार करने का काम किया है।

स्वागत भाषण कार्यशाला के कोऑर्डिनेटर प्रोफेसर नावेद जमाल ने दिया। उन्होंने राष्ट्रीय भाषा की भावना को जगाने में गांधी के हिंदी/ हिंदुस्तानी को बढ़ावा देने के विचार और भारतेंदु हरिश्चंद्र की भूमिका पर ज़ोर दिया। उन्होंने जाने-माने भौतिक विज्ञानी और शिक्षाविद प्रोफेसर डी.एस. कोठारी की भूमिका और योगदान पर भी प्रकाश डाला, जिन्होंने 1960-1965 तक वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली समिति (CSTT) की अध्यक्षता की थी।

राजनीति विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर बुलबुल धर-जेम्स ने दर्शकों को कार्यशाला के विषय से परिचित कराया। सहायक निदेशक डॉ. शहजाद अहमद अंसारी ने वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग (CSTT) के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। सोशल साइंस के डीन, प्रोफेसर मुस्लिम खान ने आमंत्रित विशिष्ट वक्ता के रूप में सभा को संबोधित किया। डॉ. सरोज कुमार दास ने अपने संबोधन में भारतेंदु हरिश्चंद्र के विचार पर फिर से ज़ोर दिया, जिसमें उन्होंने निज भाषा उन्नति (अपनी भाषा में विकास) पर प्रकाश डाला था।

कार्यशाला में पूरे भारत से भाग लेने वाले प्रमुख विशेषज्ञों में प्रोफेसर वैष्णा नारंग (जेएनयू); प्रोफेसर राजेंद्र कुमार पांडे, प्रिंसिपल, देशबंधु कॉलेज (डीयू); प्रोफेसर प्रवीण कुमार झा (डीयू); प्रोफेसर नावेद जमाल, जेएमआई; डॉ. सरोज कुमार, गवर्नमेंट मीरा गर्ल्स कॉलेज, उदयपुर; डॉ. अखशना सिंह, अर्थशास्त्र विभाग, एआरएसडी कॉलेज (डीयू); डॉ. अखलाक अहमद, राजनीति विज्ञान विभाग, ए.एस. कॉलेज, बिक्रमगंज, बिहार; डॉ. रजनी बहादुर सिंह, टीजीटी, सोशल साइंस केएचएमएस दिल्ली; हिमांशी मैनारी, टीजीटी सोशल साइंस, केएचएमएस, दिल्ली; अब्दुल कुद्दूस अंसारी, पीजीटी अर्थशास्त्र, सैयद आबिद हुसैन एस एस स्कूल, जेएमआई; डॉ. नीतीश कुमार, (डीयू); सुश्री सोनी कुमारी ठाकुर, (जेएमआई); मंसूर हसन खान, टीजीटी, (जेएमआई स्कूल) ने भाग लिया। कार्यक्रम में राजनीति विज्ञान विभाग के सभी फैकल्टी सदस्य तथा डॉ. राजेश कुमार, हिंदी अधिकारी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन जामिया मिल्लिया इस्लामिया के राजनीति विज्ञान विभाग के फैकल्टी मेंबर डॉ. शशि कांत के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने मशहूर शायर मजाज़ लखनवी का एक शेर सुनाकर वाइस-चांसलर के भाषण में महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रेरणादायक संदेश पर ज़ोर दिया। “तेरे माथे पे यह आँचल बहुत खूब है लेकिन तू इस आँचल से एक परचम बना लेती तो अच्छा था।”

यह ध्यान देने वाली बात है कि CSTT की स्थापना 1 अक्टूबर, 1960 को भारत सरकार (शिक्षा मंत्रालय) के एक प्रस्ताव के ज़रिए, राष्ट्रपति के आदेश से, भारत के संविधान के अनुच्छेद 344 के क्लॉज़ (4) के प्रावधानों के तहत गठित समिति की सिफारिशों के अनुसार की गई थी। 1960 के प्रस्ताव के अनुसार, कमीशन का काम नई शब्दावली का इस्तेमाल करके स्टैंडर्ड साइंटिफिक टेक्स्टबुक तैयार करना है, जिसे उसने विकसित या मंज़ूर किया है, और साइंटिफिक और टेक्निकल डिक्शनरी तैयार करना है। CSTT चार कैटेगरी: मौलिक, व्यापक, परिभाषात्मक और लर्नर्स-ओरिएंटेड में शब्दावली तैयार करता है।

प्रोफेसर साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी